Indian J. Soc. & Pol. 08 (01) :95-96: 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 January 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत पर निराशा का प्रभाव

शारदा सिंह[1]
[1]शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, हण्डिया पी0जी0 कालेज हण्डिया, प्रयागराज, उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

शिक्षा मानव जीवन का मूल साधन है इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास ज्ञान कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन कर सुसंस्कृति तथा योग्य नागरिक बन समाज एवं देश का कल्याण करता है। शिक्षा समाज तथा देश के भविष्य की बुनियाद होती है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति की अर्न्तनिहित शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। जैसा कि जॉन लाक ने कहा भी है – कि पौधों का विकास कृषि के द्वारा और मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है। शिक्षा ही मानव प्रवृत्ति का निर्माण कर पारस्परिक सामाजिक सम्बन्धों का निर्धारण करती है।

KEYWORDS: *शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा,अध्ययन आदत, विद्यार्थी*

शिक्षा जगत में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भावी राष्ट्र व समाज के कर्णधार है। उनमें निराशा जैसी समस्या की व्याप्ति निश्चय ही राष्ट्र की उन्नति के लिए गम्भीर प्रश्न है। अतः यह शिक्षा जगत के लिए अति आवश्यक हो जाता है कि वह अन्वेषित करें कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निराशा की स्थिति, सीमा व समाधान क्या है? क्या ऐसे भी कुछ विद्यार्थी है जो अब समस्या से स्वयं को अपनी आन्तरिक क्षमताओं के स्तर पर बचा पाते हैं? वर्तमान समय में माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् रोजगार की संभावना अत्यधिक कम तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यय तथा प्रतिस्पर्धा अत्यधिक होने के कारण विद्यार्थियों के जीवन में निराशा, हताशा, जैसी मानसिक बीमारियां घर करती जा रही हैं। क्योंकि शिक्षा ही जीवन में समस्त सफलताओं का आधार है। जो मनुष्य के व्यक्तित्व तथा आत्मविश्वास का सृजन एवं सुसमायोजन करती है। अतः निश्चय ही विफलता तथा सामाजिक व आर्थिक स्तर पर पिछड़ने से विद्यार्थियों में निराशा, कुंठा व कुसमायोजन व्याप्त होना स्वाभाविक है। परिणामस्वरूप निराशा विद्यार्थियों के अध्ययन आदत को स्वाभाविक रूप से प्रभावित करती है।

माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान दुर्गति का मुख्य कारण आर्थिक उदारीकरण भी है। वर्ड बैंक और IMF जैसी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं का विचार है कि भारत जैसे विशाल एवं विकासशील राष्ट्र में माध्यमिक स्तर पर सब्सिडी उचित नहीं है क्योंकि यहां सरकार की आय का मुख्य साधन अप्रत्यक्षकर यानि गरीबों से प्राप्त होता है। अतः वह पैसा गरीब बच्चों के अनिवार्य और निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा पर खर्च करना ही न्याय संगत है। अतः सरकार ने माध्यमिक स्तर पर बजट में भारी कटौती की है जिससे इस क्षेत्र में विकसित स्तर पर संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाए। परिणामस्वरूप माध्यमिक स्तर की शिक्षा ऐसे अवसर उपलब्ध नहीं करा पायी जिससे छात्र त्वरित स्तर पर रोजगार प्राप्त कर सकें जिसके कारण वह उच्च शिक्षा के अन्तहीन प्रतियोगी समर में फंस जाता है तथा नकारात्मक परिणाम आने पर निराशा एवं हताशा का शिकार होता है।

निराशा विभिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न हो सकती है यथा भौतिक बाधाएं जिनमें प्रोत्साहन अथवा पुरस्कार समाप्त या कम किया गया है। प्रत्युत्तर क्रम के आरम्भ होने या पूर्ण होने में देर की जाए अथवा जब सफलता की आशा हो तब असफलता अथवा दंड प्राप्त हो। निराशा की मात्रा इस बात निर्भर होती है कि उसको उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों की मात्रा कैसी है। निराशा की मात्रा को चिकित्सा की क्षेत्र में GSR activity तथा Pulse Rate द्वारा मापा जाता है।

मुख्यतः विद्यार्थी जीवन में निराशा के मुख्य स्रोत प्रतिस्पर्धा उच्च आकांक्षा स्तर, जन्मजात अयोग्यताएं, बाह्यकारक (प्रकृति पर्यावरण सम्बन्धी, सामाजिक कारक, आर्थिक कारक, वर्तमान परिस्थितियां और दशाएं, असंगत लक्ष्य अथवा आवश्यकताएं आदि) हो सकते हैं।

विद्यार्थी जीवन में उभरी निराशा का हमारी अध्ययन आदत पर बहुत ही गम्भीर प्रभाव पड़ता है। किसी व्यक्ति विशेष के अध्ययन की विधि को हम अध्ययन आदत कहते हैं जो व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर भिन्न–भिन्न पायी जाती है यथा कक्षाओं में कुछ विद्यार्थी नियमित होते हैं तो कुछ अनियमित कुछ पुस्तक पढ़ कर, व्याख्यान सुन कर, कोई नोट्स बनाकर, कोई कई घंटे लगातार, कुछ कम समय की अध्ययन आदत रखते हैं। परीक्षा में सफलता की मात्र अध्ययन आदत का संतोषजनक संकेत नहीं हो सकता। कई तकनीकी एवं सकारात्मक पहलुओं के अध्ययन आदत को वैज्ञानिक ढंग से सम्मिलित व प्रशिक्षित कर छात्रों के परीक्षा परिणाम में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

अध्ययन आदत की परिभाषा देते हुए '**एच0 जे0 आइजनेक**' ने कहा है कि – 'आदत एक प्रथागत व्यवहार प्रतिमान, ज्ञानात्मक या संवेगात्मक प्रत्युत्तर है। प्रत्युत्तर के समय विद्यमान और कार्यरत परिस्थितियों के आधार पर इसकी भविष्यवाणी की जा सकती है। अधिगम प्रक्रियाओं द्वारा या अन्तर्निहित अर्जित सेट अथवा प्रत्युत्तर प्रतिमान के प्रति प्रवृत्ति द्वारा इसका वर्णन किया जाता है।' तो वहीं **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार – अध्ययन का

1: Corresponding Author

अभिप्राय उन तथ्यों, विचारों या विधियों में दक्षता प्राप्त करने के लिए की जाने वाली खोज, जिनको व्यक्ति अभी तक नहीं जानता है या केवल आंशिक रूप से जानता है।

इसके साथ ही अध्ययन आदत के व्याख्यायित करते हुए '**रिम्स**' ने कहा कि– 'अध्ययन ज्ञान या ग्रहण शक्ति को सुरक्षित रखने, योग्यताओं को प्राप्त करने या समस्याओं का समाधान करने के लिए किया जाने वाला नियोजित प्रयास है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि अध्ययन आदत वह व्यवहार, प्रतिमान ज्ञानात्मक या संवेगात्मक प्रत्युत्तर है जिनका प्रारम्भ में स्वेच्छा से अभ्यास किया जाता है और कुछ अभ्यास के बाद वह प्रतिमान का प्रत्युत्तर स्वचालित हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि छात्र प्रभावशाली अध्ययन आदतों का तभी निर्माण कर सकते हैं जब उनको अध्ययन के उत्तम नियमों का ज्ञान हो। इन मनोवैज्ञानिकों में **एन0बी0 कफ** का नाम विशेषज्ञ रूप से उल्लेखनीय है। इन्होंने प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतों का अन्वेषण किया। इसके परिणामस्वरूप इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि उत्तम छात्रों में अध्ययन आदतें उत्तम होती हैं। **क्रो एण्ड क्रो** ने अध्ययन आदतों को विकसित करने वाले कुछ मनोवैज्ञानिक कारणों का उल्लेख किया यथा अध्ययन का निश्चित उद्देश्य, स्थान, अवधि तथा उचित भौतिक दशाओं के साथ समुचित विश्राम आदि इसमें सम्मिलित हैं।

अध्ययन आदत पर निराशा के प्रभाव पर अनेकों महत्वपूर्ण शोधकार्य हुए हैं इनमें कुछ प्रसिद्ध शोधकर्ताओं के शोध परिणामों का उल्लेख आवश्यक हो जाता है यथा – '**डंकन एण्ड डंकन**' के अनुसार 'छात्रों की अध्ययन शैली रूचि तथा उत्प्रेरणा के अध्ययन में पाया कि कमजोर शिक्षा, दोषपूर्ण अध्ययन शैली का परिणाम है जो कि छात्रों के रूचि और उत्प्रेरणा पर विपरीत असर डालती है।'

जॉनसन के अनुसार 'कमजोर शास्त्रीय योग्यता वाले छात्रों के अध्ययन में जो कि छात्रवृत्ति से छूट गए थे, पाया कि एक बड़ी संख्या में ऐसे विद्यार्थी परीक्षा में फेल हो गए। **मगोलीवाल** ने 1960 के दशक में प्रयागमण्डल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत पर किए गए शोध के निष्कर्ष के आधार पर यह व्यक्त किया कि व्यक्तिगत भेद से उत्पन्न हुई निराशा छात्रों के अध्ययन के ढंग में भिन्नता उत्पन्न करती है साथ ही साथ संरक्षक का वर्ग व्यवसाय कुछ सीमा तक अध्ययन आदतों को प्रभावित करती है। '**क्रो एण्ड क्रो** ने तो यहां तक कहा है कि सकारात्मक वातावरणीय कारकों (तापमान, रोशनी, उपकरण, शोरगुल तथा थकान आदि) की अनुपस्थिति तथा नकारात्मक तथ्यों की उपस्थिति भी विद्यार्थी जीवन में निराशा उत्पन्न कर अध्ययन आदतों को प्रभावित करती है। '**फ्रेस्टन** तथा **सिवेज**' के अनुसार अध्ययन आदतों पर सामाजिक आर्थिक स्तर तथा व्यक्तित्व का सीधा प्रभाव पड़ता है। इन–इन कारकों की नकारात्मक दशा निराशा उत्पन्न कर व्यक्ति की बुद्धि अध्ययन आदत स्मृति शक्ति व सामान्य मानसिक गुणों पर प्रभाव डालती है।

उपरोक्त समस्याओं के समाधान हेतु निम्न बिन्दु विचारणीय हैं – माध्यमिक स्तर पर प्रदत्त सुविधाएं शिक्षण संस्था एवं घर का वातावरण और सुविधाएं विद्यार्थी के अध्ययन आदत को अच्छा रखती है। जिससे उसमें निराशा जैसे नकारात्मक तत्व उत्पन्न नहीं होते। लैंगिक आधार पर भी विद्यार्थियों में निराशा अध्ययन आदत पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डालती क्योंकि दोनों वर्गों की अध्ययन आदतें लगभग समान होती हैं। साथ ही जाति सम्बन्धी विभेद से उपजी निराशा अध्ययन आदत को प्रभावित कर सकती है। अतः समस्त जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक जागरूकता एवं प्रणाली समान रखनी चाहिए। आर्थिक स्थिति के कारण उत्पन्न हुई निराशा के निवारण हेतु छात्रवृत्ति सब्सिडी आदि का प्रबन्ध होना चाहिए। अनुसूचित जाति एवं जनजाति की सामाजिक स्थिति के कारण माध्यमिक स्तर के छात्रों में उभरी निराशा की समाप्ति के लिए इस वर्ग के विद्यार्थियों को अतिरिक्त जागरूकता एवं प्रोत्साहन उपलब्ध कराना चाहिए। ग्रामीण विद्यार्थियों को शहरों में माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के क्रम में आवासीय आधार पर उपजी निराशा के निराकरण हेतु छात्रावास व भोजन का प्रबन्ध होना चाहिए। साथ ही माध्यमिक स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् रोजगार के अभाव में उपजी निराशा के निराकरण हेतु सरकार को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रमों में व्यावसायिक शिक्षा तथा अध्ययन आदतों में तकनीकी ज्ञान का समावेश करना चाहिए साथ ही माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु समुचित रोजगार की उपलब्धता करना भी सरकार का अनिवार्य कार्य है ताकि इस स्तर के विद्यार्थी आर्थिक व सामाजिक वंचना के शिकार न होकर रोजगार के अवसरों का लाभ उठाते हुए अपनी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को मजबूत कर राष्ट्र के विकास में समुचित योगदान दे सकें।

REFERENCES

कृष्णन्, बी0 (1956) *स्टडी हैविट्स ऑफ इण्टर कालेज स्टूडेन्ट्स,* मैसूर, साइकोलॉजिकल स्टडी पृ063

माथुर, डॉ0 एस0एस0 (2005) *शिक्षण कला एवं शैक्षिक तकनीकी,* आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर पृ03

सिंह अरूण कुमार (2014) *शिक्षा मनोविज्ञान,* पटना, भारती भवन प्रकाशन पृ05

सिंह, राजेन्द्र प्रसाद (2009) *विकासात्मक मनोविज्ञान,* नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन पृ08

क्रो एण्ड क्रो (1948) *एजुकेशनल साइकोलाजी,* अमेरिकन बुक कम्पनी

जॉनसन बी0एच0 (1959) *इन फ्लूएन्स ऑफ पर्सनेलिटी आन एकेडिमिक सक्सेस पर्सनल गाईडेन्स*

अग्रवाल, डॉ0 विमल (2018) *मनोविज्ञान,* एस0वी0पी0डी0 पब्लिकेशन

गुप्ता एस0पी0 (2008) *आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान,* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन